विचार बिन्दु

मन की दुर्बलता से भयंकर और कोई पाप नहीं। –विवेकानंद

दुधारी तलवार है सोशल मीडिया

यह याद करना बहुत दिलचस्प है कि पिछली शताब्दी के आखिरी दशक में जिस सोशल मीडिया की शुरुआत हुई थी आज कैसे हम हमारी समूची ज़िंदगी पर छा गया है। ऑर्कुट और माय स्पेस जैसे मंचों ने हममें से बहुतों को आकर्षित किया था लेकिन तब यह आकर्षण सतही था और हम लोग भूले-भटके इनका इस्तेमाल करते थे। वैसे तब भी मुझ लगा था कि सोशल मीडिया हमारी भावनात्मक ज़रूरत को पूरा करने का एक प्रभावी माध्यम है। फैलते शहरों और बढ़ती जा रही व्यस्तताओं के बीच जिन अपनों से हम आमने-सामने नहीं मिल सकते हैं, सोशल मीडिया हमें उनसे जोड़े रखने का दायित्व निबाहने लगा था। तब इण्टरनेट इतना सुलभ नहीं था जितना आज है, और स्मार्ट फोन की तो तब कोई आहट ही नहीं थी। अब इन दोनों के कारण सोशल मीडिया दुनिया की बहुत बड़ी आबादी के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। भारत जैसे देश में सोशल मीडिया के प्रचलन में एक बाधा भाषा की भी रही है लेकिन अब लगभग सभी महत्वपूर्ण भारतीय भाषाओं के लिए कम्प्यूटर सुविधाएं सुलभ हो जाने की वजह से उनके लिए भी इसका प्रयोग करना सम्भव हो गया है जिन्हें अंठोज़ी नहीं आती है। यह काम कृत्रिम बुद्धि के प्रसार के बाद और अधिक आसान हो गया है।

आज सोशल मीडिया हममें से अधिकांश की ज़िंदगी का अभिन्न अंग बन चुका है। निश्चय ही आज के समय में भी समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जो या तो सोशल मीडिया के अस्तित्व से ही अनजान है या फिर जान बूझकर इससे दूरी बरत रहा है। जो इससे अनजान हैं यह उनकी सीमा है और जो इससे दूरी बरते हुए हैं, यह उनका चयन है। लेकिन भले ही समाज का एक हिस्सा इससे कटा हुआ हो, और ख़ुद इसका प्रयोक्ता न हो, वह भी इससे प्रभावित तो होता ही है। इसलिए व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इस की उपयोगिता, सम्भावनाओं और सीमाओं पर बात की जानी चाहिए।

जैसा मैंने शुरु में कहा, सोशल मीडिया ने हमें उनसे जोडा है जो किसी भी कारण हमसे दूर थे या हैं। आज ऐसे बहुत सारे प्रसंग याद किए जा सकते हैं जहां सोशल मीडिया ने उनको मिलाया है जो बरसों से जुदा थे। दोस्तियों और पारिवारिक रिश्तों को मज़बूत करने में इसने बडी भूमिका निबाही है। और केवल इतना ही नहीं समान रुचि वाले लोगों को निकट लाने और उनकी रुचियों को पालने-पोसने में भी इसने बड़ी भूमिका अदा की है। अगर आपकी किसी ख़ास चीज़ में, जैसे शास्त्रीय संगीत में रुचि है तो सोशल मीडिया आपको समान रुचि वाले लोगों से जोडने वाला पुल बन जाता है। यहां आकर आप अपनी वैयक्तिक समस्याओं का समाधान भी पाते हैं और जानकार लोगों का मार्गदर्शन भी आपको मिल जाता है। मैंने बहुत बार अपनी तकनीकी समस्याओं के समाधान सोशल मीडिया पर पाए हैं। अगर आप किसी अनजान जगह की यात्रा करना चाहते हैं तो ऐसे बहुत सारे लोग आपको मिल जाएंगे जो आपको वहां के बारे में पूरी, प्रामाणिक और उपयोगी जानकारी दे देंगे। यह देखना बहुत आह्लादक है कि लोग कितनी आसानी से आपकी सहायता करने को तैयार रहते हैं। ऐसे लोग आपकी सहायता के लिए आगे आ जाते हैं जिनसे न कभी आप मिले हैं और न शायद कभी भविष्य में मिलेंगे। इस तरह सोशल मीडिया एक बड़ा और समावेशी समाज रचता है।

इधर जब से दुनिया के बहुत सारे देशों में सत्ताएं अधिक शक्तिशाली और दमनकारी हुई हैं उन्होंने अपनी शक्ति का पहला प्रयोग सूचनाओं के निर्बाध प्रवाह को रोकने में किया है। दुनिया के बहुत सारे देशों में सरकारें ऐसी ख़बरों को दबाने में लगी हैं जो उनके अनुकूल नहीं होती है। मुख्यधारा के मीडिया पर नियंत्रण उनके लिए सहज होता है। लेकिन वे ताकतें भी अभी सोशल मीडिया पर कब्जा नहीं कर पाई हैं, हालांकि इसके लिए उनके प्रयत्न ज़ारी हैं। ऐसी बहुत सारी ख़बरें जिन्हें मुख्यधारा का मीडिया मार देता है, सोशल मीडिया के माध्यम से ही हम तक पहुंच पा रही हैं। यह इसकी उपादेयता का बड़ा और अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। सोशल मीडिया में बहुत सारे जागरूकता अभियान भी सफलतापूर्वक चले हैं और इनसे सामाजिक बदलाव की दिशा में सार्थक काम हुए हैं। ये काम सांगठनिक स्तर पर भी हुए हैं और वैयक्तिक स्तर पर भी। असल में जब कोई व्यक्ति ऐसी कोई सामठी पोस्ट करता है जिसमें बदलाव का स्वर होता है तो हममें से बहुत सारे लोग उससे प्रभावित होते हैं। यही तो बदलाव की शुरुआत की प्रक्रिया है।

हाल के वर्षों में राजनीतिक दल व अन्य संगठन इन माध्यमों का अधिकाधिक प्रयोग करने लगे हैं। अगर यह काम केवल अपनी बात कहने तक सीमित रहे तो किसी को कोई शिकायत नहीं होगी, लेकिन देखने में यह आया है कि बहुत सारे संगठन कटुता और विद्वेष फैलाने और अपने से भिन्न आवाज़ों को दबाने के लिए इन माध्यमों का ग़लत प्रयोग करने लगे हैं।

सोशल मीडिया विचार और साहित्य के लिए भी बहुत कुछ करता है। इधर जब ख़ास तौर पर हिंदी में ऐसे प्रकाशन कम हो गए हैं जिनमें विचार और साहित्य के लिए काफी जगह हो, तो सोशल मीडिया एक सशक्त विकल्प के रूप में सामने आया है। जहां तक साहित्य की बात है, इसने विशेष रूप से नवोदित लेखकों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए मंच प्रदान किया है और अब तो स्थापित लेखक भी इन माध्यमों का खुलकर उपयोग करने लगे हैं। नए प्रकाशनों की जानकारी भी हमें सोशल मीडिया से मिलती है और अनेक लेखक व प्रकाशक अपने प्रकाशनों की मार्केटिंग के लिए भी इन माध्यमों का उपयोग करने लगे हैं।

लेकिन इस सबको पढ़ते हुए अगर आपको यह लग रहा है कि सोशल मीडिया में केवल अच्छाइयां ही अच्छाइयां हैं, तो मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप आगे भी पढ़ें। सबसे पहली बात तो मुझे यह लगती है कि सोशल मीडिया बहुत जल्दी हमें अपने फंदे में जकड़ लेता है और हम दीन-ओ-दुनिया से बेखबर रहकर इसी आभासी दुनिया में विचरण करने लग जाते हैं। बहुत सारे अध्ययनों ने यह बताया है कि हमारा स्क्रीन टाइम लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे हमारी अन्य गतिविधियां प्रतिकूलत: प्रभावित होती हैं। इसका दास बन जाने के अन्य अनेक दुष्परिणाम भी नज़र आने लगे हैं, जैसे इसके बहुत सारे प्रयोक्ता अवसाद के शिकार हो जाते हैं, वे सामाजिक रूप से अलग-थलग हो जाते हैं। बहुत बार यहां होने वाली कटु बहसें हमारे वैयक्तिक और सामाजिक रिश्तों पर बुरा असर डालती हैं। हम में से बहुत सारे लोग सोशल मीडिया मंचों का उपयोग करते हुए सामान्य, शिष्टाचार का भी निर्वाह नहीं करते हैंऔर इससे अनावश्यक रूप से बदमज़गी पैदा होती है। सोशल मीडिया की एक बहुत बड़ी बुराई हाल के बरसों में देखने को आई है। असल में यह माध्यम से ज़्यादा इसके प्रयोक्ताओं की बुराई है। निहित स्वार्थी तत्व इन माध्यमों का दुरुपयोग अफवाहें फैलाने के लिए करते हैं जिनसे हमारी सामाजिक समरसता आहत होती है। यह अकारण नहीं है कि जब भी कहीं कोई तनाव की स्थिति पैदा होती है सरकार को पहली बात इण्टरनेट बंद करने की सूझती है।

हाल के वर्षों में राजनीतिक दल व अन्य संगठन इन माध्यमों का अधिकाधिक प्रयोग करने लगे हैं। अगर यह काम केवल अपनी बात कहने तक सीमित रहे तो किसी को कोई शिकायत नहीं होगी, लेकिन देखने में यह आया है कि बहुत सारे संगठन कटुता और विद्वेष फैलाने और अपने से भिन्न आवाज़ों को दबाने के लिए इन माध्यमों का ग़लत प्रयोग करने लगे हैं। ये संगठन तमाम तरह की अनैतिक और अवांछित हरकतें करके दूसरे पक्ष को कुचलने का काम करते हैं। महिलाएं और अल्पसंख्यक ख़ास तौर पर इनके निशाने पर रहते हैं। घृणित भाषा का जितना और जैसा प्रयोग इन माध्यमों पर हाल के वर्षोंमें हुआ है वह चिंता पैदा करने वाला है। सोशल मीडिया से ग़लत फायदा उठाने के दुष्कर्म में अनेक अपराधी और असामाजिक तत्व भी आगे रहते हैं। वे हमारी निजी जानकारी का दुरुपयोग करके अनेक प्रकार के ग़लत काम करते और हमें नुकसान पहुंचाते हैं। आज के समय में डेटा एक बड़ी संपदा बनता जा रहा है, और सोशल मीडिया डेटा चोरों को बहुत रास आता है।

सोशल मीडिया में अंतर्निहित एक बहुत बड़े ख़तरे की तरफ युवाल नोआ हरारी ने अपनी ताज़ा किताब 'नेक्सस'मेंइशारा किया है। वे बताते हैं कि विभिन्न व्यावसायिक उपक्रम एआई की मदद से यह प्रयास करते हैं कि लोग अधिक से अधिक समय तक सोशल मीडिया से जुड़े रहें। लोग जुड़े रहेंगे तो उनके उत्पादों के बारे में जानेंगे और उन्हें खरीदेंगे। अब यहीं असल ख़तरा पैदा होता है। लोगों को सोशल मीडिया से जोड़े रखने के लिए हिंसा, आतंक, डर आदि की सामठी परोसी जाती है, क्योंकि यह बात प्रमाण सिद्ध है कि इनमें लोगों की रुचि अधिक प्रगाढ़ होती है। तो इस तरह किन्हीं के व्यावसायिक हितों के लिए भोले लोगों को अवांछित सामठी परोस कर सोशल मीडिया की लत लगाई जाती है। यह बहुत बड़ा ख़तरा है जिसकी तरफ सबका ध्यान जाना चाहिए।

इन सारी बातों से यह समझा जा सकता है कि जहां सोशल मीडिया हमारे समय की बहुत बड़ी ज़रूरत और नेमत है, वहीं इसके दुरुपयोग की आशंकाएं भी कम नहीं हैं। दुरुपयोग से बचने का एक ही उपाय है और वह है सावधानी बरतना। सावधानी बरतने के लिए इसके प्रयोक्ताओं को प्रशिक्षित किया जाए, सचेत किया जाए और ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद की जाए तो इसके दुरुपयोग की आशंकाओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। माता-पिता और अभिभावकों की भूमिका इस मामले में बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें अपने बच्चों के सोशल मीडिया उपयोग पर पैनी नज़र रखनी चाहिए और उन्हें ऐसा करने के लिए समुचित प्रशिक्षण देने का दायित्व सामाजिक संगठनों और जागरूक जन को उठाना चाहिए। इस सारे काम में मैं सरकार को अलग रखने का पक्षधर हूं क्योंकि मुझे आशंका है कि सरकार बजाय वह करने को जो उससे अपेक्षित है, वह करने लगेगी जिसमें उसे अपना हित नज़र आएगा। लेकिन कानूनी रूप से अगर वह अपना न्यूनतम दायित्व भली भांति निबाहे तो उसका स्वागत होना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की भजनलाल सरकार की जमकर तारीफ

बालमुकुन्द ओझा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कार्यों की जमकर तारीफ की है। उन्होंने भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार के एक साल के शानदार काम की सराहना करते हुए कहा कि वे जिस कुशलता और प्रतिबद्धता के साथ राजस्थान के तेज विकास में जुटे हैं, वो प्रशंसनीय है। आज राजस्थान में गरीब, किसान, युवाओं के कल्याण, सड़क, बिजली, पानी सहित हर प्रकार के विकास कार्य तेजी से हो रहे हैं। सरकार अपराध और भ्रष्टाचार नियंत्रण में जो तत्परता दिखा रही है, उससे नागरिकों और निवेशकों में नया उत्साह आया है। मोदी ने यह बात हाल ही में जयपुर में राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट का उद्घाटन करते हुए कही थी। मोदी ने राजस्थान की प्रगति की सराहना करते हुए राजस्थान राइजिंग तो है ही रिलायबल भी है, राजस्थान रिसेप्टिव भी है। समय के साथ खुद को रिफाइन करना भी जानता है। चुनौतियों से टकराने का नाम राजस्थान है। नए अवसर बनाने का नाम है राजस्थान। उन्होंने कहा कि राजस्थान के इस आर फैक्टर में एक और नाम जुड़ गया है। राजस्थान के लोगों ने भारी बहुमत से रिस्पोंसिव रिफॉर्मिव सरकार बनाई है। भजनलाल और उनकी टीम ने शानदार काम करके दिखाया है।

राजस्थान में भजनलाल सरकार ने 15 दिसम्बर 2024 को अपने कार्यकाल का एक साल पूरा कर लिया है। भजनलाल सरकार का दावा है कि एक साल में ही जनता की सरकार के रूप में संवेदनशीलता से किये कार्य का परिणाम है कि आज समाज के सभी वर्ग सरकार के कार्यों से बेहद संतुष्ट है। सरकार का दावा है कि इस अवधि में सरकार लगातार जनता के बीच गई और जन कल्याणकारी कार्यों को अमलीजामा पहनाया। भाजपा सरकार का दावा है कि जन हितैषी कार्यों का परिणाम था कि विधानसभा के सात उप चुनावों में से पांच में भाजपा ने विजय पताका फहराई। इस अवधि में भजनलाल सरकार के किसी भी मंत्री के दामन पर कोई दाग नहीं लगा। मुख्यमंत्री की सोच है कि रोजमर्रा के कार्यों के लिए सरकार और आमजन के बीच आपसी संवाद को और आसान कैसे बनाया जाये, इसके लिए अधिक तत्परता व सजगता से काम करना होगा। सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार सुशासन के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। इन मूलभूत सुविधाओं व आर्थिक विकास के माध्यम से सामाजिक विकास के सभी को एक जुट होकर प्रयास करने की जरुरत है तभी मुस्कराते राजस्थान का हमारा सपना साकार होगा।

सादा जीवन और साफ-सुथरी छवि वाले भजनलाल की ख्याति भाजपा और सरकार में एक ऐसे व्यक्ति की है, जो हर काम पूरी शिद्दत से करते हैं और उतनी ही कुशलता से करवाते भी हैं। इधर-उधर के मुद्दों में उलझे बिना सरकार की मजबूती के लिए लगातार काम करते रहने वाले भजनलाल भाजपा में अहम पदों पर रहे और अक्सर अपने संगठन कौशल का लोहा मनवाया। मुख्यमंत्री जनसेवा की अपनी सोच को आगे बढ़ाते हुए प्रदेश के आर्थिक विकास और आधारभूत ढांचे को जन आकांक्षाओं के अनुरूप मजबूत बनाने में जुटे हैं। भजनलाल सरकार का दावा है कि एक साल की अल्प अवधि में सरकार ने जनता की सरकार के रूप में संवेदनशीलता से कार्य किये और यह उसी का परिणाम है कि आज समाज के सभी वर्ग सरकार के कार्यों से बेहद संतुष्ट है। मुख्यमंत्री की सोच है कि रोजमर्रा के कार्यों के लिए सरकार और आमजन के बीच आपसी संवाद को और आसान कैसे बनाया जाये, इसके लिए अधिक तत्परता व सजगता से काम करना होगा।

भजनलाल सरकार ने अपने कार्यकाल के पहले वर्ष में ही राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट का आयोजन कर प्रदेश के सर्वांगीण विकास का आगाज़ किया जिसमें 32 देशों द्वारा भाग लिया। इस समिट के प्रारंभ होने से पूर्व ही 35 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एमओयू संपादित किए जा चुके हैं जो निवेशकों द्वारा राज्य के प्रति व्यक्त किए गए विश्वास को दर्शाता है। राज्य सरकार पांच वर्षों में राज्य की अर्थव्यवस्था को दोगुना करने का लक्ष्य रखकर कार्य कर रही है। यह समिट इस क्रम में एक महत्वपूर्ण कदम है। आम आदमी की सोच है प्रदेश के बहुमुखी विकास में तीन चीजें बाधक बनी हुई है। भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और कुशासन प्रगति और विकास के दुश्मन के रूप में उभरे हैं। जब तक इन पर काबू नहीं पाया जायेगा तब तक विकास और प्रगति एकांगी होगी। हर सरकार लोक कल्याण का वादा करती है मगर लोक कल्याण के मार्ग में अवरोध बने इन कारकों को समाप्त करने की दिशा में कोई ठौस कारवाही नहीं करती। चूँकि राजनेताओं के हित इनसे जुड़े है इसलिए इन बुराइयों को समाप्त नहीं किया जा सकता। जब तक समाज से यह बीमारी पूरी तरह खत्म नहीं होगी, हम भ्रष्टाचार की गंगा में गोते लगते रहेंगे। बाबा के नाम से मशहूर डॉ. किरोड़ी लाल मीणा कृषि मंत्री के पद से इस्तीफ़ा देने के बाद आज भी आंदोलनरत है। किरोड़ी का कहना है भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और अकर्मण्यता आज भी व्याप्त है। इन्हें समाप्त करने के बाद ही जन कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

–बालमुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार।

"वन नेशन वन इलेक्शन" लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने की दिशा में बढ़ता कदम

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

सोमवार 16 दिसंबर को लोकसभा में केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल द्वारा एक देश एक चुनाव से संबंधित विधेयक पेश करने के साथ ही देष में लोकसभा और सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होने की दिशा में एक कदम और बढ़ जाएगा। हालांकि सरकार इस विधेयक को संसदीय समिति को भेजने की मंशा व्यक्त करती रही है ताकि इस पर सांसदीय समिति के माध्यम से गंभीर मंथन और चिंतन हो सके। हालांकि अभी एक देश एक चुनाव की दिशा में बढ़ते कदमों में स्थानीय निकायों के चुनावों की प्रकिया बाकी है जिस पर सरकार ने अभी गंभीरता नहीं दिखाई है और उसका कारण भी है कि उस प्रस्ताव के विधेयक को विधानसभाओं से भी पारित करवाया जाना होगा।

खैर लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ होते हैं तो भले ही कांग्रेस सहित विपक्ष विरोध कर रहे हो पर माना जाना चाहिए कि यह सही दिशा में बढ़ता कदम होगा। ऐसा नहीं है कि भारतीय लोकतंत्र के लिए यह कोई नई बात हो बल्कि आजादी के समय से ही देश में एक साथ चुनाव कराने पर बल दिया जाता रहा है।

लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव अलग-अलग होने से करीब एक साल तक चुनी हुई सरकार पंगु ही बन कर रह जाती है। इसको राजस्थान सहित अन्य प्रदेशों के चुनावों से इस तरह से समझा जा सकता है। हालांकि यह उदाहरण मात्र है और सभी प्रदेशों पर समान तरीके से लागू होता है। नवंबर दिसंबर में राजस्थान की विधानसभा के चुनाव होते हैं। सरकार बनते ही अपनी प्राथमिकता भी तय कर पाती है जब तक बजट की तैयारी में जुटना पड़ता है क्योंकि अब फरवरी में ही बजट सेशन होने लगे हैं। मई जून में लोकसभा के चुनाव के कारण अप्रेल से ही आचार संहित लगने की तलवार लटक जाती है और फिर करीब डेढ़ माह का समय आचार संहिता को समर्पित हो जाता है। इसके कुछ समय बाद ही या यों कहे कि परिवर्तित बजट से निपटते निपटते सरकार के सामने स्थानीय निकायों व पंचायतीराज संस्थाओं के चुनाव का समय हो जाता है और उसके कारण लंबा समय इन चुनावों के कारण आचार संहिता के भेंट चढ़ जाता है।

इस बीच में कोई कोई ना कोई उपचुनाव आ जाते हैं तो उसका असर भी चुनी हुई सरकार को भुगतना पड़ता है। जैसे तैसे चौथा साल पूरा होने को होता है कि सरकार ताबड़तोड़ निर्णय करने लगती है और इनके क्रियान्वयन का समय आते आते चुनाव आचार संहिता लग जाती है। इस तरह से एक बात तो साफ हो जाती है कि पांच साल के लिए चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकार का कमोबेस करीब एक साल का समय तो चुनाव आचार संहिताओं के ही भेंट चढ़ जाता है। यह तो केवल लोकतांत्रिक जनता द्वारा चुनी हुई सरकार के कार्यों के प्रभावित होने का एक उदाहरण मात्र है।

अब अलग-अलग चुनाव होने से चुनाव पर होने वाले सरकारी और गैर सरकारी खर्चों पर भी ध्यान दिया जा सकता है। 1952 के पहले चुनाव में सरकारी व गैर सरकारी जिसमें राजनीतिक दलों और चुनाव लड़ने वालों का खर्च भी शामिल है वह करीब 10 करोड़ के आसपास रहा। 2010 के आमचुनाव में 10 हजार करोड़ रु. का व्यय माना जा रहा है जो 2019 में 55 हजार करोड़ और 2024 के आमचुनावों में एक लाख करोड़ को छू गया है। इसमें चुनाव आयोग, प्रशासनिक व्यवस्थाओं के साथ ही राजनीतिक दलों, प्रत्याशियों द्वारा होने वाला खर्च शामिल है। हालांकि मोदी सरकार आने के बाद से ही 2014 से एक देश एक चुनाव पर चर्चा का सिलसिला चल निकला था। 2017 में नीति आयोग ने इसे उपयुक्त बताया और 2018 में संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने इसे सही दिशा बताया। सितंबर 2023 में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में 6 सदस्यीय कमेटी बनाई गई और 65 बैठकें कर 18626 पन्नों की रिपोर्ट इसी साल मार्च, 24 में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को पेश की गई। यदि इन सभी सिफारिशों को लागू किया जाता है तो 18 संसोधनों की आवश्यकता होगी। हालांकि सरकार ने अभी एक हिस्से यानी कि लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ करने की दिशा में कदम बढ़ाती लग रही है। और माना जा रहा है कि 2029 के चुनाव नई व्यवस्था यानी कि एक देश एक चुनाव वन नेशन वन इलेक्शन से हो। हालांकि इसके लिए चुनाव आयोग व सरकारों को काफी मशक्कत करनी पड़ेगी पर यदि एक बार यह सिलसिला चल निकलेगा तो इसे लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत ही माना जाएगा।

राजनीतिक दलों द्वारा यह शंका व्यक्त की जा रही है कि इससे छोटे व स्थानीय दलों के अस्तित्व पर ही संकट आ जाएगा। इसके साथ ही वोटिंग पेटर्न प्रभावित होगा। चुनाव में कानून व्यवस्था बनाए रखने और चुनाव के लिए मशीनरी भी अधिक लगाने की बात की जाती है तो खर्चे व आधारभूत सुविधाओं यथा ईवीएम मशीन, वीवीपेट मशीन, उनके रखरखाव सहित अन्य आवश्यक संसाधनों की आवश्यकताओं को लेकर भी शंका व्यक्त की जा रही है।

हालांकि जिस तरह से चुनाव आयोग ने संसाधनों का आकलन कर अपनी आवश्यकताएं सरकार को बता दी है उससे लगता है कि चुनाव आयोग भी वन नेशन वन इलेक्शन के लिए मानसिक रुप से पूरी तरह से तैयार है। 2029 के चुनाव में चुनाव आयोग द्वारा 7951 करोड़ रुपए का खर्च अनुमानित किया गया है। राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों सहित अन्य खर्च अलग होंगे। वन नेशन वन इलेक्शन के सकारात्मक पक्ष भी है और उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता।

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि एक साथ चुनाव होने से संसाधन तो एक बार जुटाने होंगे पर उसके बाद व्यवस्था सुनिश्चित हो जाएगी। आजादी के 75 साल से भी अधिक समय हो जाने के बाद जिस तरह से मतदाताओं की उदासीनता देखी जा रही है वह निश्चित रुप से कम होगी। राजनीतिक दल भले ही आज विरोध कर रहे हैं पर एक साथ चुनाव से उन्हें भी कम मशक्कत व एक बार ही मशक्कत करनी होगी। प्रचार सामग्री से लेकर प्रचार अभियान को आसानी से संचालित किया जा सकेगा। योजनाबद्ध प्रयासों से विधानसभा व लोकसभा प्रत्याशियों का एक साथ प्रचार अभियान संचालित हो सकेगा जिससे अलग अलग चुनाव होने से बार बार होने वाले व्यय में कुछ हद तक राजनीतिक दलों को भी कम खर्च करना पड़ेगा। चुनी हुई सरकारों को बार बार आचार संहिता के संकट से गुजरना नहीं पड़ेगा और सरकार को काम करने का अधिक समय मिल सकेगा। दोनों चुनाव एक साथ होने से भले ही पोलिंग बूथ अधिक बनाने पड़े, मशीनरी अधिक लगानी पड़े पर मतदाताओं और चुनाव कराने वाली मशीनरी के लिए भी सुविधाजनक होगा।

एक बात यह भी कि असामाजिक तत्वों की गतिविधियां भी काफी हद तक कम हो सकेगी। इससे सरकारी संसाधनों की बचत, मानव संसाधन को बार बार नियोजित करने से होने वाले सरकारी कार्य में बाधा में बचत और प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से बार बार चुनाव के स्थान पर एक साथ चुनाव होने से खर्चों में भी कमी आएगी। देखा जाए तो वन नेशन वन इलेक्शन लोकतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को मजबूत करने की दिशा में बढ़ता कदम माना जा सकता है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

अतेवा सरपंच ने सैकड़ों हरे पेड़ों को कटवाया, ग्रामीणों में आक्रोश

ग्रामीणों ने हरे पेड़ काट रहे ठेकेदार को रोका और बैठक आयोजित की

करौली, (निसं)। अतेवा ग्राम पंचायत के सरपंच अमरचंद जाटव ने आम जनता द्वारा अपने पूर्वजों की स्मृति में लगाये हरे वृक्षों एवं प्राकृतिक रूप से तालाब की पाल पर लगे हरे वृक्ष चोरी छिपे नीलाम कर कटवा डाले, जिससे ग्रामीणो में भारी आक्रोश व्याप्त हो गया।

ग्रामीणों को इस कृत्य का पता चला तो सकल पंच आम बस्ती अतेवा एकत्रित होकर इसके खिलाफ कठोर कार्यवाही के लिए तैयार हुई। ग्रामीणों ने हरे पेड़ काट रहे ठेकेदार को रोका और आम बस्ती अतेवा की एक पंचायत आहूत की। ग्रामीणों की नाराजगी रोड जाम करने पर आमादा थी। सैकड़ों की संख्या में लोग सड़क पर पहुंच गए, जब इस बात की खबर सपोटरा विधायक हंसराज मीणा को लगी तो उन्होंने ग्रामीणों को समझाते हुए कठोर कार्यवाही का भरोसा दिलाया। विधायक के आदेश पर मौके पर पहुंचे वन विभाग के प्रेम चन्द, कैलादेवी थाने से एएसआई रामवीर सिंह मय जाप्ता, कैलादेवी पुलिस वृताधिकारी मीना मीणा, पटवारी राजाराम मीणा, गिरदवाल मौके पर पहुंचे और कटी हुई हरी लकड़ी जब्त की गई। ग्रामीणों की शिकायत पर कैलादेवी थाना, वन विभाग में कार्यवाही सुनिश्चित की गई।

गांव के पंच बच्चू गुर्जर, भीम सिंह, रामसिंह गेहुंआ, लक्ष्मीकांत शर्मा, दामोदर, प्यारेलाल गुर्जर, रामनारायण माली, शेलेन्द्र नापित, पूरन गुर्जर, लक्ष्मीनारायण जोगी, अवधेश, भाजपा नेता गोपेश शर्मा, योगेश भारद्वाज, सीताराम सहित सैकड़ों लोगों ने बताया कि हमारे यहां हरे पेड़ की कटाई पिछले 10 साल से प्रतिबन्धित है। अंतिम संस्कार के लिये भी लकड़ी बाजार से लाई जाती है, फिर सरपंच का ये कृत्य सकल पंच समाज को अपमानित करने एव पर्यावरण के महत को खत्म करने वाला है। सरपंच द्वारा गांव में सरकारी मद से बने सामुदायिक भवन एव सार्वजनिक शौचालय को तोड़कर अपना निजी घर बना लिया गया है। पिछले पांच साल में ग्राम पंचायत में एक रुपये का विकास कार्य नहीं हुआ है।

लोगों ने बताया कि सरपंच द्वारा सैकड़ों बीघा जमीन पर अवैध रूप से कब्जा किया हुआ है। अगर प्रशासन ने दो दिन के अंदर कठोर कार्यवाही नहीं की तो आम बस्ती अतेवा द्वारा कलेक्टर कार्यालय पर धरना दिया जाएगा जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 दिसम्बर, 2024

पौष मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, आर्दा नक्षत्र रात्रि 1:14 तक, शुक्ल योग रात्रि 11:22 तक, कौलव करण दिन 12:28 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रसिक माधुरी जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:30 तक, शुभ 9:48 से 2:05 तक, चर 1:40 से 2:57 तक, लाभ-अमृत 2:57 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:13, सूर्यास्त 5:32

मेष

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृष

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। मनोबल बढ़ेगा।

कर्क

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संयम बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक परेशानियों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

धनु

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मकर

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है।

मीन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।